International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 7 Issue 8, August 2017,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पंडित गणेश चौबे के जीवनी, स्वाध्याय आ संग्रह

बिक्रम कुमार सिंह

शोध छात्र, भोजपुरी विभाग बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविधालय मुजफ्फरपुर, बिहार।

जन्म– पं० गणेश चौबेजी के जनम अगहन कृष्ण द्वादशी, दिन गुरूवार, संवत 1969 तदनुसार 5 दिसम्बर 1912 ई0 के भइल रहे। ईहॉ के जनम ईहॉ का ननिहर ग्राम– सॉढ़ा डम्पर जिला–मुजफ्फरपुर में भईल रहे। इहाँ के पुसतैनी आ पैतृक घर अब पूर्वी चम्पारण के बंगरी गाँव में बा। एही गाँव में इहाँ के लालन–पालन आ शिक्षा–दीक्षा शुरू भइल। जहाँ के पिताजी भरथरी चौबे एगो सम्पन्न किसान रहीं। ई सूचना कई लेख में मिल रहल बा। बाकिर बिहारी साहित्य की विभूतियाँ नामक पुस्तक में तिथि 6 दिसम्बर, बतावल गइल बा। शोध छात्र रवीन्द्र कुमार 'रवि' अपना शोध–पत्र में चौबेजी के माता जी के नाम रामसखी देवी बतवले बाड़न, जे अउर लेख सब में उपलब्ध नइखे।"[1]

शिक्षा– पं० गणेश चौबे जी के शिक्षा–दीक्षा के बारे में विद्वानन लेखक लोग ई बतवले बा कि चौब जी 1932 ई० में मैट्रिक के परीक्षा पास कइलीं आ उहाँ के पढ़ाई–लिखाई मोतिहारी स्थित जिला स्कूल से भइल। डॉ० स्वर्ण किरण लिखले बानी–"स्कूल शिक्षा के नाम पर चौबे जी ने मोतिहारी जिला स्कूल में सन् 1932 में प्रवेशिका परीक्षा को उतीर्ण किया। छात्रवृति भी मिली, लेकिन वह आगे नहीं पढ़ सके। हाँ टाइपिंग हैण्ड का प्रशिक्षण लिया था, जिसके अधार पर सन् 1934 ई० से 1948 ई० तक मोतिहारी के समाहरणालय में लिपिक का काम कारते रहे।बाकिर, विद्वान लेखक लोग चौबे जा के शुरूआती पढ़ाई के बारे में कुछुओ नइखे लिखले। चौबे जी अपना शुरूआती पढ़ाई के बारे में एक अन्तर्वीक्षा में रास बिहारी पाण्डेय जी के बतवले बानी। प्रश्नों के दायरे में पं० गणेश चौबे जी बतावत बानी–" जब मैं सात वर्ष का हुआ तो मेरा नाम पड़ोस के एक प्राथमिक पाठशाला में लिखाया गया। मेरी पढ़ने में रूची थी। मेरे शिक्षक स्व० गोपाल जी लाल एक साहित्य प्रेमी व्यक्ति थे। उन्हों अनेक दोहे, चौपाई, घनाक्षरी, कुण्डलियाँ और छप्पय आदि याद थे, वे उनको लड़कों को गा–गााकर सुनाया करते थे।इस प्रकार ई स्पष्ट बा कि चौबे जी की शुरूआती पढ़ाई जिला स्कूल, मोतिहारी से, जहाँ से उहाँ का मैट्रिक का के स्टेनोग्राफी आ टाइपिंग के प्रशिक्षण लिहनी। ई बात उल्लेखनीय बा कि उहाँ का स्कुली पढ़ाई करत हर वर्ग में प्रथम आवत रहीं।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 7 Issue 8, August 2017,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पेशा अथवा वृति – जअसन कि पहिले चर्चा आइल बा, चौबे जी मैट्रिक पास कइला के बाद शार्टहैण्ड टाइपिंग के प्रशिक्षण लिहनी, जवान के आधार पर उहाँ के मोतिहारी कलक्टरी में कलर्क के नौकरी लागल। साल रहे सन् 1934। सन् 1934 ई0 से लेके सन् 1948 ई0 तक चौबे जी मोतिहारी कलक्टरी के नौकरी कइनी। बाकिर, पिता–भरथरी चौबे के निधन के बाद उहाँ का नौकरी छोड़े केपड़ल आ पैतृक कार्य कृषि से जुड़े के पड़ल, काहें से कि चौबे जी तीनों भाइन में सबसे बड़ रहीं। चौबे जी के पारिवारिक परिचय में जवन कुर्सीनामापुस्तकन में दिहल गइल बा ओह से पता चलत बा कि चौबे जी के दुनों छोट भाई महेशचौबे जी तीनों भाइन में सबसे बड़ रहीं।पिताजी की असामयिक मृत्यु के कारण इन्हें खेती का काम भी देखना पड़ा।"[2]

<u>स्वाध्याय आ संग्रह</u>– जिला स्कूल में पढ़त खानी दु गो उललेखनीय घटना भइल, जवन चौबे जी के भोजपुरी भाषा–लोक साहित्य आ संस्कृति के प्रति रोख मोड़ देखल। पहली घटना के उल्लेख, चौबे जी साक्षात्कार के क्रम में अइसे बतवले बानी–सन् 1925 ई0 में मैं पॉचवे वर्ग का विधार्थी था। मेरे साथी एक मैथली ब्राह्मण थे। उन्होंने मुझसे प्रश्न किया–चौबे जी मेरी मातृभाषा मैथली है, तुम्हारी मातृभाषा का क्या नाम है? मैंने उत्तर दिया –हिन्दी। उन्होंने फिर प्रश्न किया–पुस्तकों की भाषा हिन्दी है। क्या तुम घर पर वैसा ही बोलते हो? मैं निरूत्तर हो गया। मेरा दिल में जिज्ञासा हुई। मैंने कई व्यक्तियों से अपनी मातृभाषा का नाम जानने का व्यर्थ प्रयास किया। मेरे इस प्रश्न का तब उत्तर मिला जब मैंने सन् 1928 ई0 में 'सुधा' में प्रकाशित स्व० रास बिहारी राय शर्मा का 'भोजपुरी' शीर्षक लेख पढ़ा। कहे के बात नइखे कि मित्र के एगो सवाल चौबे जी के भोजपुरी के प्रति जिज्ञासु बनवलस। दुसरकी घटना के चर्चा चौबे जी ओही साक्षात्कार में अइसे कइले बानी– ''जब मैं नवें वर्ग का विद्यार्थी था तो स्व० लाल बिहारी दे का 'फॉकटेल्स ऑफ बंगाल' पढ़ते समय मेरे मन में आया कि क्यों न मैं अपने क्षेत्र की ऐसी दंत कथाओं का हिन्दी में एक संग्रह तैयार करूँ? मैं अपने क्षेत्र की ऐसी दंत कथाओं के संग्रह में लग गया। सन् 1934 ई0 के भुकम्प के बाद मुझे चम्पारण कलक्ट्री में नौकरी मिल गई। वहां के पुस्तकालय में मानव विज्ञान की अनेक पुस्तकें थी। मैं राय बहादुर शरच्चन्द्र राय की छोटानागपुर की आदिम जातियों पर लिखी सभी पुस्तकों को पढ़ गया। फिर मैंने रिस्ले, डाल्टन, ओ मोले ग्रियर्सन की पुस्तकें पढ़ी, 'मैन इन इंडिया' और बिहार–ओडिसा रिसर्च सोसायटी के जर्नल के सभी प्राप्य अंक पढ़ डाले। इससे प्रेरण लेकर मैंने अपने क्षेत्र के रहन–सहन, रीति–रिवाज, लोक–कथा कहावत, पहेली, पुजा, पर्व–त्योहार, देसी खेल आदि का संग्रह करना आरंभ किया। इनमें लोक गीत सबसे सरस लगे और इसका संग्रह कार्य बड़ी तेजी से आगे बढ़ गया। इस कार्य में मुझे आचार्य शिवपूजन सहाय और स्व० रामधारी प्रसाद

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 7 Issue 8, August 2017,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विशारद से बहुत प्रोत्साहन मिला। डॉ० स्वर्ण किरण चौबे जी के सांस्कृतिक भाषा–विज्ञान के अध्ययन की प्रेरणा स्व० राय बहादुर शरच्चन्द्र राय (रॉची) के ग्रंथ से मिली, लोक कथाओं का संकलन की प्रेरणा स्व० लाल बिहारी दे के ग्रंथ से। इसी तरह यह लोक कथाओं एवं गीतों के अध्ययन की सरस पद्धति के लिए स्व0 डॉ वैरियर एलविन की पुस्तक और लोक गीतों में प्रतीक के अध्ययन के लिए मि0 डब्ल्यू०पी० आर्चर की पुस्तक से प्रेरित हुए।"[3]

पं० गणेश चौबे जी के पास एगो निजी समृद्ध पुस्तकालय के चर्चा मिलेला, जवना में लोक साहित्य के संघे–संघे अंग्रेजी, हिन्दी, भोजपुरी सहित दोसरों भाषा सब के पुस्तक, रिसर्च जर्नल्स, पत्र–पत्रिका, पाण्डुलिपि के संग्रह बा। डॉ ब्रजभूषण मिश्र, 'पं० गणेश चौबे इन्सायक्लोपीडिया ऑफ भोजपुरी' नामक लेख में लिखले बानी–'चौबेजी के पास भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति, लोक साहित्य के शोधपूर्ण ग्रंथ, पत्र–पत्रिका आ शोधपूर्ण सामग्री के विशाल संग्रह बाटे। जवन सामग्री आन जगह न मिली, इहॉ के पुस्तकालय में भेंटा जाई। देश–विदेश के अधिकारी विद्वान लोग के हजारन पत्रन के संग्रह पं० जी के पास बाटे। एह से ई पता चलत बा कि चौबे जी के निजी पुस्तकालय भा संग्रहालय कवनो व्यवसाय खातिर नइखे। उनका स्वाध्याय के चलते ऊ एगो संग्रहालय भा पुस्तकालय के रूप ग्रहण कर लेले बाटे। चौबे जी के स्वाध्याय भइला के चर्चा लिखित रूप में कई जगह मिलत बा। चौबे जी के विद्वता के चर्चा भी उहॉ के स्वाध्यायी भइला के प्रमाणित करत बा।

पं० गणेश चौबे जी के व्यक्तित्व–कृतित्त्व पर कई विद्वान लोग के लेख छपल बा। उहॉ के ऊपर केन्द्रित दुगो पुस्तिका के प्रकाशन भइल बा आ पत्र–पत्रिकन के विशेषांक भी निकल बा। एह सब लेखन आ पुस्तिका सब से चौबे जी के जीवन–वृत पर पूरा–पूरा जानकारी मिलत बा। उहॉ के जन्म, शिक्षा–दीक्षा, रोजी–रोजगार, स्वाध्याय संग्रह, संस्थागत या व्यक्ति सम्बन्ध के बारे में खुल के जानकारी विद्वान लोग देले बा आ ई सब जानकारी उनका जीवित अवस्था में उनका द्वारा पुष्ट आ समर्थित बा। चौबे जी के जन्म के लेके उनका कृतित्त्व तक के उजागर करेवाला लेख, पत्र–पत्रिका, ग्रंथ–पुस्तिका के सूची नीचे दिहल जा रहल बा :–

1.पं० गणेश चौबे–ले०–लव शर्मा 'प्रशांत'।

2.लोक साहित्य मनीषी पं० चौबे–ले०–हरिश्चन्द्र साहित्यालंकार।

3.बिहारी भाषा साहित्य की विभूतियॉ–सं०–रास बिहारी पाण्डेय।

4.साहित्य–यात्रा–ले०–परमेश्वर दूबे शाहाबादी।

5. भोजपुरी साहित्य के स्तंभ–ले०–जनार्दन पाण्डेय विप्र।

6. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का नउआ अधिवेशन रॉची के अध्यक्ष पं० गणेश चौबे–ले० अक्षयवर दीक्षित।

7. पं० गणेश चौबे : इनसायक्लोपीडिया ऑफ भोजपुरी ले०–ब्रजभूषण मिश्र।

8. पं० गणेश चौबे–ले०–डॉ ब्रजभूषण मिश्र।

9. भोजपुरी लोक साहित्य के पंडित–ले०अखिल विनय।

10.पं० गणेश चौबः व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व (पुस्तक)–सं०–रास बिहारी पाण्डेय।

11.लोक साहित्य मर्मज्ञ पंडित गणेश चौबे–ले०–डॉ ब्रजभूषण मिश्र।

12.पं० गणेश चौब विशेषांक (भोजपुरी लोक)–प्र० सं० –डॉ० राजेश्वरी शांडिल्य।

13 .लोक रंग का सौन्दर्यशास्त्र (पं० गणेश चौबे पर केन्द्रित पुस्तक)–सं०–सं०–डॉ० अणिमा–अनुरागिनी।

एह सब पत्र पत्रिकन आ ग्रंथन में छपल दर्जनों लेखन के अलावे वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के दु गो छात्र लोग स्नातकोत्तर पाठयक्रम खातिर शोध निबंध लिखलें। पहिला शोध निबंध प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी के निर्देशन में त्रिलोकी कुमार सिंह के रहे, जबकि दुसरका डॉ0 गदाधर सिंह के निर्देशन में रवीन्द्र कुमार 'रवि' के। एह दुनो शोध पत्रन में चौबे जी के जीवन पर नीमन प्रकाश पड़त बा।"[4]

पं० जी पुरान–पुरान पोथी आ दुलर्भ ग्रंथ के खोज कइनी। एह में से सात सौ अत्यन्त

प्राचीन आ दुर्लभ ग्रंथ के एगो संग्रह इहॉ का बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना के दान दे दिहनी जवन उहॉ 'चौबे संग्रहालय' नाम से सुरक्षित बाटे। चम्पारण के इतिहासिक स्थलन से मिलल सामग्रियन के इहॉ का पटना संग्रहालय के दान देनी।

चौबे जी के पास भोजपुरी भाषा–साहित्य आ संस्कृति, लोक साहित्य के शोधपूर्ण ग्रंथ, पत्र पत्रिका आ शोधपूर्ण सामग्री के विशाल संग्रह बाटे। जवन सामग्री आन जगह न मिली, इहॉ के पुस्तकालय में भेंटा जाई। देश–विदेश के अधिकारी विद्वान लोक के हजारन पत्र के संग्रह पं० जी के पास बाटे।"[5]

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 7 Issue 8, August 2017,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एह प्रकार से चौबे जी के संग्राहक प्रवृति के बारे में जवन सूचना सब प्राप्त होत बा, ओह के खनगे–खनगे एह तरह बॉटल जा सकत बा–

लोकवार्त्ता संग्रह–भोजपुरी गीत, लोक कथा, पहेली, कहावत, सूक्ति, लोक–विश्वास रसम–रेवाज विषयक सामाग्रियन के संगह।

ग्रंथ संग्रह–पुरान–पुरान पोथी और दुर्लभ ग्रंथन के संग्रह एही में से सात सौ पोथियन, पाण्डुलिपियन या ग्रन्थन के बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना के दानं। ई चौबे संग्रहालय के नाम से सुरक्षित बा।

कला–षिल्प सामग्री संग्रह– चौबे जी चम्पारण के ऐतिहासिक स्थलन से कला–शिल्प सम्बन्धी विविध सामग्रियन के संकलन कइनी, जवन पटना संग्रहालय में रखाइल बा।

पुस्तक आ पत्रिका के संग्रह–भोजपुरी भाषा–संस्कृति विषयक, आन–आन भाषा के लोक साहित्य विषयक पुस्तकन आ पत्र–पत्रिका के विशाल संग्रह बा। मिथिक सोसाइटी, बंगलोर, बिहार रिसर्च सोसाइटी, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, प्राच्य विद्या आ इंडियन फोकलोर के जर्नलस आ पत्रिकन के संग्रह उल्लेखनीय।

षब्द–संग्रह– चौबे जी के द्वारा भोजपुरी लोक में प्रचलित हजारों शब्दन के संग्रह कइल गइल रहे, जे आगे चलके 'भोजपुरी हिन्दी कोश' के रूप में सेतुन्यास मुंबई द्वारा प्रकाशित भइल।

पत्र–संग्रह– देश–विदेश के मान्य विद्वान लोग के साथ पत्र व्यवहार चलत रहे। एह विद्वान लोग के पत्रन के विशाल संग्रह चौबेजी के पास रहे।

चौबेजी के संग्राहक प्रवृति के चर्चा करत विक्रामादित्य मिश्र 'किसान साहित्य साधक : पं० श्री गणेश चौबे' नामक लेख में लिखले बानी–''इन्होनें भोजपुरी भाषा और भोजपुरी लोक साहित्य विषयक सामग्री का संकलन, अध्ययन, सम्पादन तथा प्रकाशन कार्य में अपना विशिष्टि स्थान बना लिया है। भोजपुरी भाषा और लोक साहित्य की एक से एक दुर्लभ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियॉ, पुस्तकें पत्रिकाएँ आदि इनके यहॉ देखने को मिली।"[6]

एह प्रकार, ई प्रमाणित होत बा कि चौबे जी अपना जीवन पर्यन्त (मृत्यु 29 अक्टुबर 1997) देश के अनेकन बड़हन विद्वानन् लोग से जुड़ल रहनी। विदेशी विद्वानन् में रूसी विद्वान

बी० ए० चेर्नीशेव से अपने के पत्र मित्रता रहे आ पुस्तक पत्रिका के लेन देन चलत रहे। एह संबंध में डॉ0 ब्रजभूषण मिश्र जी के कथन देखल जा सकत बा।

चौबे जी के देन शोधी, अन्वेषी के साथ–साथ शोध सहयोगी के भी रहल बा। इहाँ के संपूर्ण साहित्यिक कार्य एक प्रकार से शोधपूर्ण रहल बा। उहाँ के लोक आधारित साहित्य सामाग्रियन के संग्रहन आ संरक्षण त करबे कइलीं, ओह पर आलोचनात्मक लेखनो कइलीं। इहाँ के जीवन स्वाध्याय आ संग्रहक रूप में बितइनी।

संदर्भ–ग्रंथ :–

1.सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' आ विश्वरंजन वगैरह–सं०– माटी के बोली, नबीनगंज छपरा, 1965 ई० अगस्त अंक।

2. रास बिहारी पाण्डेय–सं०–बिहारी भाषा साहित्य की विभूतियॉ, लोक साहित्य संगम, गया (बिहार), सं०–प्रथम–अप्रील–1979(गणेश चौबे शीर्षक से डॉ० स्वर्ण किरण के लेख)

3. डॉ० बसंत कुमार–प्र०–सं०–स्मारिका–अ० भा० भा० सा० सम्मेलन, नउवा अधिवेशन रॉची, 1985 ई० (अक्षयवर दीक्षित के इहे लेख 'भोजपुरी के जागरूक पहरूआ पण्डित गणेश चौबे' शीर्षक से उनकर लिखल पुस्तक 'भोजपुरी सपूत' जवन 1992 ई० में भोजपुरी विकाश मंडल सिवान द्वारा प्रकाशित भइल रहे।

4. पाण्डेय कपिल प्र० सं०–भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (त्रैमासिक) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना, अक्टूबर–1988 सम्मेलन अध्यक्ष (विशेषांक)।

5. रास बिहारी पाण्डेय–सं०–पं०– गणेश चौबेः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, ग्रंथ लोक साहित्यसंगम, बिहिया, रामसूरत भवन, भोजपुर–1992 ई०।

6. डॉ० अणिमा अनुरागिनी (संकलक–संपादक), लोकरंग का सौन्दर्यशास्त्र, अमिधा प्रकाशन मुजफ्फरपुर/दिल्ली, 2009ई०।